Quick word tests

तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	आह्लाद	आह्नाद	फ्रीज	फ्रीज	मग्ज	मग्ज	हृत्स्थल	हत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्नितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्रा	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्जूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्ज़े	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क़	इश्क़
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्स्रुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्जाम	रत	रत्न	दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य	सद्गन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्ष्टांत	दर्षांत	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज्ज	उ ज़	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्नाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	ह्रास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रून कॉफी	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	काँफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इ्ज़त	इज़्जत	स्रेह	स्नेह	वक्फ़	वक्फ़	लड्डू	लडू	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	ध्ह्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुर्री	कुर्री
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कट्टू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	सख़्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्ज़ी		
पश्चिम	पश्चिम	હ ૂ	हॅंद्र	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख़्म	सपल्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़रव्र	फ़ख़	त्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	ह्रूप	हूप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्भवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्भवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यृह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की याता करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई याताएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दृष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शल्क बढा, नहीं बढेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हैंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढे - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39.950 रुपये. 43.950 रुपये और 24.950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू 1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्य1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दुनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान।।

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालों को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निद्यों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो

से होता, इस बखेडे को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

दुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वहीं झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा - मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फुल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्नोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वहीं झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहत सी नाँह-नृह की और कहा -

Consonant spacing	पपसपवपवसवव	Rakar spacing	पपह्रपवपवह्रवव	पपद्वपवपवद्ववव
पपकपवपवकवव	पपहपवपवहवव	III & II a II a & a a	पपळ्रपवपवळ्रवव	पपद्भपवपवद्भवव
पपखपवपवखवव	पपक्रपवपवक्रवव	पपक्रपवपवक्रवव	पपक्षपवपवक्षवव	पपद्वपवपवद्ववव
पपगपवपवगवव	पपख़पवपवख़वव	पपख्रपवपवख्रवव	पपञ्चपवपवञ्चवव	पपद्धपवपवद्धवव
पपघपवपवघवव	पपग़पवपवग़वव	पपग्रपवपवग्रवव		पपद्भपवपवद्भवव
पपङ्पवपवङ्गवव	पपज़पवपवज़वव	पपघ्रपवपवघ्रवव	Conjunct spacing	पपद्मपवपवद्मवव
पपचपवपवचवव	पपड़पवपवड़वव	पपङ्गपवपवङ्गवव	पपक्तपवपवक्तवव	पपद्यपवपवद्यवव
पपछपवपवछवव	पपढ़पवपवढ़वव	पपचपवपवचवव		पपद्पवपवद्दवव
पपजपवपवजवव	पपफ़पवपवफ़वव	पपछ्पवपवछ्रवव	पपङ्गपवपवङ्गवव	पपन्भपवपवन्भवव
पपझपवपवझवव	पपयपवयवव	पपज्रपवपवज्रवव	पपङ्गपवपवङ्गवव पपङ्यपवपवङ्यवव	पपन्मपवपवन्मवव
पपञपवपवञवव	पपक्षपवपवक्षवव	पपझपवपवझवव	पपज्जपवपवज्जवव	पपल्जपवपवल्जवव
पपटपवपवटवव	पपज्ञपवपवज्ञवव	पपञ्जपवपवञ्जवव	पपञ्थपवपवज्थवव	पपल्थपवपवल्थवव
पपठपवपवठवव		पपट्रपवपवट्रवव	पपज्यपवपवज्यवव	पपल्भपवपवल्भवव
पपडपवपवडवव	Vowel spacing	ччдчачадаа	पपञ्सपवपवज्सवव	पपल्मपवपवल्मवव
पपढपवपवढवव	पपअपवपवअवव	पपड्रपवपवड्रवव	पपछ्यपवपवछ्यवव	पपल्यपवपवल्यवव
पपणपवपवणवव	पपञेपवपवअवव	पपद्रपवपवद्रवव	पपट्यपवपवट्यवव	पपश्रपवपवश्रवव
पपतपवपवतवव	पपॲपवपवॲवव	पपण्रपवपवण्रवव	पपठ्यपवपवठ्यवव	पपश्वपवपवश्ववव
पपथपवपवथवव	पपइपवपवइवव	ччячачаяаа шушанаяа	पपड्यपवपवड्यवव	पपश्लपवपवश्लवव
पपदपवपवदवव	पपईपवपवईवव	पपश्रपवपवश्रवव	पपट्यपवपवट्यवव	पपष्टपवपवष्टवव
पपधपवपवधवव	पपउपवपवउवव	पपद्रपवपवद्रवव		पपष्ट्रपवपवष्ट्रवव
पपनपवपवनवव	पपऊपवपवऊवव	पपध्रपवपवध्रवव	पपट्टपवपवट्टवव	पपष्ठपवपवष्ठवव
पपपपवपवपवव	पपएपवपवएवव	पपन्नपवपवनव	पपद्रपवपवद्रवव	पपष्ठपवपवष्ठवव
पपफपवपवफवव	पपऐपवपवऐवव	पपप्रपवपवप्रवव	पपठुपवपवठुवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपबपवपवबवव	पपऍपवपवऍवव	чч ж чача ж аа	पपड्डपवपवड्डवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपभपवपवभवव	पपऎपवपवऎवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपडुपवपवडुवव	पपह्मपवपवह्मवव
पपमपवपवमवव	पपआपवपवआवव	पपभ्रपवपवभ्रवव	पपढ्ढपवपवढ्ढवव पपत्तपवपवत्तवव	पपह्यपवपवह्यवव
पपयपवपवयवव	पपओपवपवओवव	पपम्रपवपवम्रवव		पपह्नपवपवह्नवव
पपरपवपवरवव	पपऔपवपवऔवव	पपग्रपवपवग्रवव	पपत्खपवपवत्खवव	पपह्वपवपवह्नवव
पपलपवपवलवव		पपरूपवपवरूवव	पपत्थपवपवत्थवव	
पपळपवपवळवव	पपऋपवपवऋवव	पपल्रपवपवल्रवव	पपत्नपवपवत्नवव	
पपवपवपवववव	पपऋपवपवऋवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपत्सपवपवत्सवव	
पपशपवपवशवव	पपलपवपवलवव	पपश्रपवपवश्रवव	पपत्यपवपवत्यवव	
	पपलृपवपवलॄवव	पपष्रपवपवष्रवव	पपद्धपवपवद्धवव	
पपषपवपवषवव		पपस्रपवपवस्रवव	पपद्गपवपवद्गवव	

U/Uu variant spacing	पपपॉपपरॉपपकॉपप पपपॉपपरॉपपकॉपप	Numeral spacing	पपन, पवन. पपप, पवप.	पपए, पवए. पपऐ, पवऐ.	पपद्ग, पवद्ग. गणद्ग गवद
पपहुपवपवहुवव	पपपोपपरोपपकोपप	००००१०१०११	पपफ, पवफ.	पपऍ, पवऍ.	पपद्ध, पवद्घ. पपद्भ, पवद्भ.
पपहूपवपवहूवव	पपपोंपपरोंपपकोंपप	००१०१०११११	पपब, पवब.	पपऎ, पवऎ.	पपद्व, पवद्व.
पपह्रपवपवहृवव	पपपॉंपपरॉंपपकॉंपप	००२०१०१२११	पपभ, पवभ.	पपआ, पवआ.	पपद्ध, पवद्ध.
पपहृपवपवहृवव	पपपोपपरोपपकोपप	००३०१०१३११	पपम, पवम.	पपओ, पवओ.	पपद्द, पवद्द.
पपहुपवपवहुवव	पपपोंपपरोंपपकोंपप	००४०१०१४११	पपय, पवय.	पपऔ, पवऔ.	पपष्ट, पवष्ट.
पपहूपवपवहूवव	पपपोँपपरोँपपकोँपप	००५०१०१५११	पपर, पवर.	पपऋ, पवऋ.	पपष्ट्र, पवष्ट्र.
पपरुपवपवरुवव	पपपौपपरौपपकौपप	००६०१०१६११	पपल, पवल.	पपऋ, पवऋ.	पपष्ठ, पवष्ठ.
पपरूपवपवरूवव	पपपौंपपरौंपपकौंपप	१९७१०१०७००	पपळ, पवळ.	पपल, पवल.	पपष्ठ, पवष्ठ.
पपदुपवपवदुवव	पपपौँपपरौँपपकौँपप	००८०१०१८११	पपव, पवव.	पपलृ, पवलॄ.	पपह्न, पवह्न.
पपदूपवपवदूवव		००९०१०१९११	पपश, पवश.		पपह्न, पवह्न.
पपदृपवपवदृवव	पपपुपपरुपपकुपप		पपष, पवष.		पपह्न, पवह्न.
Vowel sign spacing	पपपूपपरूपपकूपप	Letter-punct spacing	पपस, पवस.	पपङ्ग, पवङ्ग.	पपह्न, पवह्न.
Vowel sign spacing	पपपृपपरृपपकृपप	पपक, पवक.	पपह, पवह.	पपछ्र, पवछ्र.	(4)
पपपंपपरंपपकंपप	पपपृपपरॄपपकृपप	पपख, पवख.	पपक़, पवक़.	पपट्र, पवट्र.	पपहु, पवहु.
पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपपूरपपूरुपपकूपप	पपग, पवग.	पपख़, पवख़.	ччд, чад. 	पपहूँ, पवहूँ.
पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपपूँपपरूँपपकूँपप	पपघं, पवघ.	पपग़, पवग़.	पपड्र, पवड्र.	पपह, पवह.
पपपँपपरँपपकँपप	``E ``E	पपङ, पवङ.	पपज़, पवज़.	पपद्र, पवद्र.	पपहृं, पवहृं.
पपपॆपपरॆपपकॆपप	पपर्पपपर्रपपर्कपप	पपचं, पवच.	पपड़, पवड़.	पपद्र, पवद्र.	पपहुँ, पवहुँ.
पपपेंपपरेंपपकेंपप	पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपछ, पवछ.	पपढ़, पवढ़.	पपर्, पवर्.	पपहूँ, पवहूँ.
पपर्पेंपपरेंपपर्केंपप	पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपज, पवज.	पपफ़, पवफ़.	पपह्न, पवह्न.	पपरु, पवरु.
पपपेपपरेपपकेपप	पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपझ, पवझ.	पपय़, पवय़.	पपळ्र, पवळ्र.	पपरू, पवरू.
पपपेंपपरेंपपकेंपप	पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपञ, पवञ.	पपक्ष, पवक्ष.		पपदु, पवदु.
पपपेँपपरेँपपकेँपप	पपर्पेंपपर्रेंपपर्केंपप	पपट, पवट.	पपज्ञ, पवज्ञ.	पपक्त, पवक्त.	पपदूँ, पवदूँ.
पपपैपपरैपपकैपप	पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपठ, पवठ.		पपङ्ग, पवङ्ग.	पपदृ, पवदृ.
पपपैंपपरैंपपकैंपप	पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपड, पवड.	पपअ, पवअ.	पपङ्ग, पवङ्ग.	
पपपैंपपरैंपपकैंपप	पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपढ, पवढ.	पपऄ, पवऄ.	पपट्ट, पवट्ट.	-
	पपर्पैंपपर्रैंपपर्कैंपप	पपण, पवण.	पपॲ, पवॲ.	पपट्ठ, पवट्ठ.	पपक; पवक:
पपपापपरापपकापप		पपत, पवत.	पपइ, पवइ.	पपठ्ठ, पवठ्ठ.	पपख; पवख:
पपपिपपरिपपकिपप	पपपऽपवपववऽवव	पपथ, पवथ.	पपई, पवई.	पपडू, पवडू.	पपग; पवग:
पपपीपपरीपपकीपप	पप?पवपव?वव	पपद, पवद.	पपउ, पवउ.	पपडु, पवडु.	पपघ; पवघ:
पपपींपपरींपपकींपप	पपपःपवपववःवव	पपध, पवध.	पपऊ, पवऊ.	पपढु, पवढु.	पपङ; पवङ:
पपपीँपपरीँपपकीँपप				पपद्ध, पवद्ध.	

पपच; पवच:	पपड़; पवड़:	पपर्; पवर्:	पपहु; पवहु:	पपम। पवमः	पपओ। पवओः	पपद्। पवद्दः
पपछ; पवछ:	पपढ़; पवढ़:	पपह्न; पवह्न:	पपहूँ; पवहूँ:	पपय। पवयः	पपऔ। पवऔः	पपष्ट। पवष्टः
पपज; पवज:	पपफ़; पवफ़:	पपळ्र; पवळ्र:	पपरु; पवरु:	पपर। पवरः	पपऋ। पवऋः	पपष्ट्र। पवष्ट्रः
पपझ; पवझ:	पपयः; पवयः:		पपरू; पवरू:	पपल। पवलः	पपऋ। पवऋः	पपष्ठ। पवष्ठः
पपञ; पवञ:	पपक्ष; पवक्ष:	पपक्तः; पवक्तः	पपदु; पवदु:	पपळ। पवळः	पपल्। पवलः	पपष्ठ्र। पवष्ठः
पपट; पवट:	पपज्ञ; पवज्ञ:	पपङ्ग; पवङ्ग:	पपदूं; पवदूं:	पपव। पववः	पपॡ। पवॡः	पपह्न। पवह्नः
पपठ; पवठ:		पपङ्ग; पवङ्ग:	पपद्ं; पवद्ं:	पपश। पवशः		पपह्न। पवह्नः
पपड; पवड:	पपअ; पवअ:	पपट्ट; पवट्ट:		पपष। पवषः		पपह्न। पवह्नः
पपढ; पवढ:	पपऄ; पवऄ:	पपट्ठं; पवट्ठं:	-	पपस। पवसः	पपङ्ग। पवङ्ग	पपह्न। पवह्नः
पपण; पवण:	पपॲ; पवॲ:	पपठ्ठः, पवठ्ठः	पपक। पवकः	पपह। पवहः	पपछ्र। पवछ्रः	
पपत; पवत:	पपइ; पवइ:	पपड्ढं; पवड्ढं:	पपख। पवखः	पपक़। पवक़ः	पपट्र। पवट्रः	पपहु। पवहुः
पपथ; पवथ:	पपई; पवई:	पपड्डु; पवड्डु:	पपग। पवगः	पपख़। पवख़ः	पपठ्र। पवठ्रः	पपहूँ। पवहूः
पपद; पवद:	पपउ; पवउ:	पपढू; पवढू:	पपघ। पवघः	पपग्न। पवगः	पपड्र। पवड्रः	पपह । पवहः
पपध; पवध:	पपऊ; पवऊ:	पपद्धः; पवद्धः	पपङ। पवङः	पपज़। पवज़ः	पपद्र। पवद्रः	पपहॄ। पवहॄः
पपन; पवन:	पपए; पवए:	पपद्गः, पवद्गः	पपच। पवचः	पपड़। पवड़ः	पपद्र। पवद्रः	पपह्न्। पवहुः
पपप; पवप:	पपऐ; पवऐ:	पपद्धः, पवद्धः	पपछ। पवछः	पपढ़। पवढ़ः	पपर्। पवरः	पपहूँ। पवहूँ:
पपफ; पवफ:	पपऍ; पवऍ:	पपद्भः, पवद्भः	पपज। पवजः	पपफ़। पवफ़ः	पपह्न। पवहः	पपरु। पवरुः
पपब; पवब:	पपऎ; पवऎ:	पपद्व; पवद्व:	पपझ। पवझः	पपय्। पवयः	पपळू। पवळ्ः	पपरू। पवरूः
पपभ; पवभ:	पपआ; पवआ:	पपद्ध; पवद्धः	पपञ। पवञः	पपक्ष। पवक्षः		पपदु। पवदुः
पपम; पवम:	पपओ; पवओ:	पपद्द; पवद्द:	पपट। पवटः	पपज्ञ। पवज्ञः	पपक्त। पवक्तः	पपदू। पवदूः
पपय; पवय:	पपऔ; पवऔ:	पपष्ट; पवष्ट:	पपठ। पवठः		पपङ्ग। पवङ्गः	पपदृ। पवदृः
पपर; पवर:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ट्र; पवष्ट्र:	पपड। पवडः	पपअ। पवअः	पपङ्ग। पवङ्गः	
पपल; पवल:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ठ; पवष्ठ:	पपढ। पवढः	पपञै। पवञैः	पपट्ट। पवट्टः	-
पपळ; पवळ:	पपलः; पवलः:	पपष्ठु; पवष्ठु:	पपण। पवणः	पपॲ। पवॲः	पपट्ठ। पवट्ठः	पपक! पवक?
पपव; पवव:	पपॡ; पवॡ:	पपह्न; पवह्न:	पपत। पवतः	पपइ। पवइः	पपठ्ठ। पवठ्ठः	पपख! पवख?
पपश; पवश:		पपह्न; पवह्न:	पपथ। पवथः	पपई। पवईः	पपड्ढ। पवड्ढः	पपग! पवग?
पपष; पवष:		पपह्न; पवह्न:	पपद। पवदः	पपउ। पवउः	पपड्ड। पवड्डः	पपघ! पवघ?
पपस; पवस:	पपङ्गः, पवङ्गः	पपह्न; पवह्न:	पपध। पवधः	पपऊ। पवऊः	पपढु। पवढुः	पपङ! पवङ?
पपह; पवह:	पपछ्र; पवछ्र:		पपन। पवनः	पपए। पवएः	पपद्ध। पवद्धः	पपच! पवच?
पपक़; पवक़:	पपट्र; पवट्र:	पपहु; पवहु:	पपप। पवपः	पपऐ। पवऐः	पपद्ग। पवद्गः	पपछ! पवछ?
पपख़; पवख़:	पपठ्र; पवठ्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपफ। पवफः	पपऍ। पवऍः	पपद्ध। पवद्धः	पपज! पवज?
पपग़; पवग़:	पपड्र; पवड्र:	पपहः; पवहः	पपब। पवबः	पपऎ। पवऎः	पपद्भ। पवद्भः	पपझ! पवझ?
पपज़; पवज़:	पपद्र; पवद्र:	पपहृः पवहृः	पपभ। पवभः	पपआ। पवआः	पपद्व। पवद्वः	पपञ! पवञ?
	पपद्र; पवद्र:				पपद्ध। पवद्धः	

पपट! पवट?	पपज्ञ! पवज्ञ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपदू! पवदू?	पपव-वपव	पपॡ-ॡपव	पपह्ल-ह्लपव
पपठ! पवठ?		पपङ्ग! पवङ्ग?	पपदृ! पवदृ?	पपश-शपव		पपह्न-ह्नपव
पपड! पवड?	पपअ! पवअ?	पपट्ट! पवट्ट?		पपष-षपव	पपङ्र-ङ्रपव	पपह्ल-ह्नपव
पपढ! पवढ?	पपऄ! पवऄ?	पपट्ठ! पवट्ठ?	-	पपस-सपव	पपछ्र-छ्रपव	पपह्न-ह्नपव
पपण! पवण?	पपॲ! पवॲ?	पपठ्ठ! पवठ्ठ?	पपक-कपव	पपह-हपव		
पपत! पवत?	पपइ! पवइ?	पपड्ढ! पवड्ढ?	पपख-खपव	पपक़-क़पव	पपट्र-ट्रपव	पपहु-हुपव
पपथ! पवथ?	पपई! पवई?	पपड्डु! पवड्डु?	पपग-गपव	पपख़-ख़पव	पपठ्र-ठ्रपव	पपहू–हूपव
पपद! पवद?	पपउ! पवउ?	पपढ्ढ! पवढ्ढ?	पपघ-घपव	पपग़-ग़पव	पपड्र-ड्रपव	पपह-हपव
पपध! पवध?	पपऊ! पवऊ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपङ-ङपव	पपज़-ज़पव	पपद्र-द्रपव	पपह्र-हृपव
पपन! पवन?	पपए! पवए?	पपद्ग! पवद्ग?	पपच-चपव	पपड़-ड़पव	पपद्र-द्रपव	पपह्र-ह्रुपव
पपप! पवप?	पपऐ! पवऐ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपछ-छपव	पपढ़-ढ़पव	पपर्-रूपव	पपहूँ-हूँपव
पपफ! पवफ?	पपऍ! पवऍ?	पपद्भ! पवद्भ?	पपज-जपव	पपफ़-फ़पव	पपह्र-ह्रपव	पपरु-रुपव
पपब! पवब?	पपऎ! पवऎ?	पपद्व! पवद्व?	पपझ-झपव	पपय़-य़पव	पपळ्-ळ्रपव	पपरू-रूपव
पपभ! पवभ?	पपआ! पवआ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपञ-ञपव	पपक्ष-क्षपव		पपदु-दुपव
पपम! पवम?	पपओ! पवओ?	पपद्! पवद्द?	पपट-टपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपक्त-क्तपव	पपदू-दूपव
पपय! पवय?	पपऔ! पवऔ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपठ-ठपव		पपङ्ग-ङ्गपव	पपदृ-दृपव
पपर! पवर?	पपऋ! पवऋ?	पपष्ट्र! पवष्ट्र?	पपड-डपव	पपअ-अपव	पपङ्ग-ङ्गपव	C C
पपल! पवल?	पपऋ! पवऋ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपढ-ढपव	पपऄ-ऄपव	पपट्ट-ट्टपव	-
पपळ! पवळ?	पपलृ! पवलृ?	पपष्ठु! पवष्ठु?	पपण-णपव	पपॲ-ॲपव	पपट्ठ-ट्ठपव	"कपवपक"
पपव! पवव?	पपॡ! पवॡ?	पपह्नं! पवह्नं?	पपत-तपव	पपइ-इपव	पपठ्ठ-ठ्ठपव	"खपवपख"
पपश! पवश?		पपह्नं! पवह्नं?	पपथ-थपव	पपई-ईपव	पपड्ड-ड्डपव	"गपवपग"
पपष! पवष?		पपह्नं! पवह्नं?	पपद-दपव	पपउ-उपव	पपड्ड-ड्डपव	"घपवपघ"
पपस! पवस?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपह्नं! पवह्नं?	पपध-धपव	पपऊ-ऊपव	पपढ़ु-ढ़ुपव	"ङपवपङ"
पपह! पवह?	पपछ्र! पवछ्र?	•	पपन-नपव	पपए-एपव	पपद्ध-द्धपव	"चपवपच"
पपक! पवक़?	पपट्र! पवट्र?	पपहु! पवहु?	पपप-पपव	पपऐ-ऐपव	पपद्ग-द्गपव	"छपवपछ"
पपख! पवख़?	पपठ्र! पवठ्र?	पपहूं! पवहूं?	पपफ-फपव	पपऍ-ऍवव	पपद्ध-द्वपव	"जपवपज"
पपग़! पवग़?	पपड्र! पवड्र?	पपहृ! पवहृ?	पपब-बपव	पपऍ-ऍपव	पपद्भ-द्भपव	"झपवपझ"
पपज़! पवज़?	पपद्र! पवद्र?	पपहॄं! पवहॄं?	पपभ-भपव	पपआ-आपव	पपद्व-द्वपव	"ञपवपञ"
पपड़! पवड़?	पपद्र! पवद्र?	पपहुँ! पवहुँ?	पपम-मपव	पपओ-ओपव	पपद्ध-द्धपव	"टपवपट"
पपढ़! पवढ़?	पपर्! पवर्?	पपहू! पवहू?	पपय-यपव	पपऔ-औपव	पपद्-द्दपव	"ठपवपठ"
पपफ़! पवफ़?	पपह्र! पवह्र?	पपरु! पवरु?	पपर-रपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ट-ष्टपव	"डपवपड"
पपय़! पवय़?	पपळ्! पवळ्?	पपरू! पवरू?	पपल-लपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ट्र–ष्ट्रपव	"ढपवपढ"
पपक्ष! पवक्ष?		पपदु! पवदु?	पपळ-ळपव	पपल-लपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"णपवपण"
, . , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	पपक्त! पवक्त?	3' '3'			पपष्ठ्-ष्ठ्रपव	

"तपवपत"	"इपवपइ"	"ड्रुपवपड्रु"	Num-punct spacing	li Vowel sign - base
"थपवपथ"	"ईपवपई"	"डूपवपडू"		_ C
"दपवपद"	"उपवपउ"	"ढ्रूपवपढू"	पवप ₹१०१ वपव	पपकिपपकिंपपर्किपप
"धपवपध"	"ऊपवपऊ"	"द्धंपवपद्ध"	पवप ₹२०१ वपव	पपखिपपखिंपपर्खिपप
"नपवपन"	"एपवपए"	"द्गपवपद्ग"	पवप ₹३०१ वपव	पपगिपपगिंपपर्गिपप
"पपवपप"	"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹४०१ वपव	पपघिपपघिंपपर्घिपप
"फपवपफ"	"ऍपवपऍवव	"द्भपवपद्भ"	पवप ₹५०१ वपव	पपङिपपङिंपपर्ङिपप
"बपवपब"	"ऎपवपऎ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹६०१ वपव	पपचिपपचिंपपर्चिपप
"भपवपभ"	"आपवपआ"	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹७०१ वपव	पपछिपपछिंपपर्छिपप
"मपवपम"	"ओपवपओ"	"द्दपवपद्द"	पवप ₹८०१ वपव	पपजिपपजिंपपर्जिपप
"यपवपय"	"औपवपऔ"	"ष्टपवपष्ट"	पवप ₹९०१ वपव	
"रपवपर"	"ऋपवपऋ"	"ष्ट्रपवपष्ट्र"		पपझिपपझिंपपर्झिपप
"लपवपल"	"ऋपवपऋ"	"ष्ठपवपष्ठ"	000,080,088	पपञिपपञिंपपर्ञिपप
"ळपवपळ"	"ऌपवपऌ"	"ष्ठ्रपवपष्ठ्र"	008,080,888	पपटिपपटिंपपर्टिपप
"वपवपव"	"ॡपवपॡ"	"ह्नपवपह्न"	007,080,788	पपठिपपठिंपपर्विपप
"शपवपश"		"ह्नपवपह्न"	003,080,388	पपडिपपडिंपपर्डिपप
"षपवपष"	"ङ्रपवपङ्र"	"ह्रपवपह्न"	००४,०१०,४११	पपढिपपढिंपपर्ढिपप
"सपवपस"	"छ्रपवपछ्र"	"ह्नपवपह्न"	००५,०१०,५११	पपणिपपणिंपपर्णिपप
"हपवपह"	"ट्रपवपट्र"		006,080,688	पपतिपपतिंपपर्तिपप
"क़पवपक़"	"ठ्रपवपठ्र"	"हुपवपहु"	००७,०१०,७११	पपथिपपथिंपपर्थिपप
"ख़पवपख़"	"ड्रपवपड्र"	"हूपवपहू"	००८,०१०,८११	
"ग़पवपग़"	"द्रपवपद्र"	"हपवपह"	००९,०१०,९११	पपदिपपदिंपपर्दिपप
"ज़पवपज़"	"द्रपवपद्र"	"हृपवपहृ"	०००.०१०.०११	पपधिपपधिंपपर्धिपप
"ड़पवपड़"	"ऱ्पवपऱ्"	"ह्रुपवपह्र"	009.080.888	पपनिपपनिंपपर्निपप
"ढ़पवपढ़"	"ह्रपवपह्र"	"ह्रूपवपहू"	007.080.388	पपपिपपपिंपपर्पिपप
"फ़पवपफ़"	"ळ्रपवपळ्र"	"रुपवपरु"	003.080.388	पपफिपपफिंपपर्फिपप
"यपवपय"		"रूपवपरू"	00%,080,888	पपबिपपबिंपपर्बिपप
"क्षपवपक्ष"	"क्तपवपक्त"	"दुपवपदु"	004.080.488	पपभिपपभिंपपर्भिपप
"ज्ञपवपज्ञ"	"ङ्गपवपङ्ग"	"दूपवपदू"	004.000.688	पपमिपपमिंपपर्मिपप
	"ङ्गपवपङ्ग"	"दृपवपदृ"	006.080.688	
"अपवपअ"	"ट्रपवपट्ट"		00८.0१०.८११	पपयिपपयिंपपर्यिपप
"ऄपवपऄ"	"हुपवपहु"		009.080.888	पपरिपपरिंपपरिंपप
"ॲपवपॲ"	"ठुपवपठु"		- 11- 1-111	पपलिपपलिंपपर्लिपप

पपळिपपळिंपपळिंपप पपविपपविंपपर्विपप पपशिपपशिंपपर्शिपप पपषिपपषिंपपर्षिपप पपसिपपसिंपपर्सिपप पपहिपपहिंपपर्हिपप पपक्षिपपक्षिंपपर्सिपप पपक्षिपपक्षिंपपर्सिपप पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप

li Vowel sign clusters	पपर्क्हिपप	पपर्ख्त्यंपप	पपर्घ्तिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ज्रिपप	पपर्व्रिपप	पपर्लिपप
पपर्क्किपप	पपर्क्ळिपप	पपर्ग्किपप	पपर्घ्दिपप	पपर्च्हिपप	पपर्ज्लिपप	पपर्वठ्यपप	पपर्त्यिपप
पपक्खिपप	पपक्किर्यपप	पपर्ग्गिपप	पपर्घ्निपप	पपर्च्छिपप	पपर्ज्विपप	पपर्ड्डिपप	पपर्त्रिपप
पपर्क्षिपप	पपर्क्त्रिपप	पपर्ग्जिपप	पपर्घ्बिपप	पपर्च्णिपप	पपर्झ्किपप	पपर्ड्विपप	पपर्लिपप
पपर्क्विपप	पपक्त्यिपप	पपर्ग्णिपप	पपर्घ्मिपप	पपर्च्तिपप	पपर्झ्गिपप	पपर्ड्रिपप	पपर्त्विपप
पपक्छिपप	पपर्क्त्वंपप	पपर्ग्तिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्थिपप	पपर्झ्घिपप	पपर्ड्ड्यिपप	पपर्ल्सिपप
पपर्क्जिपप	पपर्क्विपप	पपर्ग्दिपप	पपर्घ्रिपप	पपर्च्दिपप	पपर्झिपप	पपर्ढ्विपप	पपत्क्यिपप
पपिक्झिपप	पपक्स्टिपप	पपर्ग्धिपप	पपर्घ्लिपप	पपर्च्धिपप	पपर्झ्तिपप	पपर्ढ्वीपप	पपर्क्रिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्डिपप	पपर्ग्निपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्निपप	पपर्झ्निपप	पपर्द्रिपप	पपर्त्सिपप
पपक्ठिपप	पपक्स्तिपप	पपर्ग्बिपप	पपर्घ्सिपप	पपर्च्यिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ढ्यिपप	पपर्त्खिपप
पपर्क्डिपप	पपक्स्पिपप	पपर्ग्भिपप	पपघ्ल्यपप	पपर्च्चिपप	पपर्झिपप	पपर्व्ह्यिपप	पपर्त्ख्रिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्प्रिपप	पपर्ग्मिपप	पपर्ङ्किपप	पपर्च्लिपप	पपर्झ्लिपप	पपर्ण्टिपप	पपर्त्ख्रिपप
पपर्क्णिपप	पपर्क्प्रिपप	पपर्ग्यिपप	पपङ्र्कीपप	पपर्च्चिपप	पपर्झ्विपप	पपर्ण्टीपप	पपर्त्न्यिपप
पपक्तिपप	पपक्स्प्र्लपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्खिंपप	पपर्च्सिपप	पपर्झ्मिपप	पपर्ण्ठिपप	पपर्त्प्रिपप
पपर्क्थिपप	पपर्ख्खिपप	पपर्ग्लिपप	पपङ्खींपप	पपर्च्यिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्ण्डिपप	पपर्त्प्लिपप
पपर्क्दिपप	पपर्ख्टिपप	पपर्ग्विपप	पपर्ङ्गिपप	पपर्च्मिपप	पपर्ञ्जिपप	पपर्ण्डिपप	पपर्क्यिपप
पपर्क्निपप	पपर्ख्विपप	पपर्ग्सिपप	पपर्ङ्गीपप	पपर्च्चिपप	पपर्ञ्शिपप	पपर्णिपप	पपर्त्स्निपप
पपर्क्पिपप	पपर्ख्णिपप	पपग्ध्यिपप	पपर्ङ्घिपप	पपर्छ्यिपप	पपञ्च्यिपप	पपर्ण्तिपप	पपर्त्स्यिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्तिपप	पपग्र्धिपप	पपङ्घींपप	पपर्छ्रिपप	पपञ्ज्यंपप	पपर्ण्यिपप	पपर्स्विपप
पपिक्बिपप	पपर्ख्दिपप	पपग्न्यिपप	पपर्ङ्चिपप	पपछ्विपप	पपर्ट्टिपप	पपर्ण्रिपप	पपत्स्र्यपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्निपप	पपग्भ्यिपप	पपर्ङ्क्षपप	पपर्ज्किपप	पपर्ट्टीपप	पपर्ण्विपप	पपर्थ्किपप
पपर्क्मिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्ग्र्यिपप	पपङ्क्रीपप	पपर्ज्जिपप	पपर्हिपप	पपर्त्किपप	पपर्थ्यिपप
पपर्क्यिपप	पपर्ख्मिपप	पपग्म्यिपप	पपर्ङ्क्रिपप	पपर्ज्झिपप	पपर्डीपप	पपर्त्खिपप	पपर्थ्मिपप
पपर्क्रिपप	पपर्ख्यिपप	पपग्ल्यिपप	पपर्झिपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ट्यिपप	पपर्त्तिपप	पपर्थ्यिपप
पपर्क्लिपप	पपर्ख्रिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्ङ्यिपप	पपर्ज्तिपप	पपर्ट्रिपप	पपर्ल्थिपप	पपर्श्रिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्लिपप	पपर्घ्जिपप	पपर्ङ्रिपप	पपर्ज्दिपप	पपर्ट्रीपप	पपर्लिपप	पपर्थ्लिपप
पपक्शिपप	पपर्ख्विपप	पपर्घ्टिपप	पपर्च्किपप	पपर्ज्निपप	पपर्विपप	पपर्त्पिपप	पपर्थ्विपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्शिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्खिपप	पपर्ज्बिपप	पपट्र्वीपप	पपर्त्फिपप	पपर्थ्सिपप
पपर्क्सिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्डिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ज्मिपप	पपर्हिपप	पपर्त्बिपप	पपर्द्गिपप
<u> </u>	पपर्ख्यिपप	पपिर्घ्णिपप	पपर्च्टिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्ठीपप	पपर्सिपप	पपर्द्धिपप

पपर्द्विपप	पपर्न्थिपप	पपर्म्धिपप	पपर्फ्तिपप	पपर्म्प्रिपप	पपर्ल्मिपप	पपर्स्टिपप
पपर्द्धिपप	पपर्न्दिपप	पपर्म्प्रिपप	पपर्प्दिपप	पपम्ब्यिपप	पपर्ल्यिपप	पपर्स्त्रिपप
पपर्द्धिपप	पपर्न्धिपप	पपन्स्म्यपप	पपर्म्निपप	पपर्म्ब्रिपप	पपर्ल्रिपप	पपर्स्डिपप
पपर्द्धिपप	पपर्न्निपप	पपर्प्किपप	पपर्फ्पिपप	पपम्भिर्यपप	पपर्ल्विपप	पपर्स्हिपप
पपर्झिपप	पपर्न्पिपप	पपर्झिपप	पपर्म्मिपप	पपर्म्भिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्स्तिपप
पपर्धिपप	पपर्म्भिपप	पपर्प्टिपप	पपर्प्यिपप	पपम्भिर्वेपप	पपर्ल्हिपप	पपर्स्थिपप
पपर्द्रिपप	पपर्न्बिपप	पपर्प्विपप	पपर्फ्रिपप	पपर्य्यिपप	पपिल्र्यिपप	पपर्स्दिपप
पपर्द्विपप	पपर्मिपप	पपर्प्टीपप	पपर्म्लिपप	पपर्ग्रिपप	पपर्ल्ह्यिपप	पपर्स्निपप
पपर्द्ध्यिपप	पपर्म्मिपप	पपर्प्डिपप	पपफ्शिपप	पपर्लिपप	पपल्क्यिपप	पपर्स्पिपप
पपर्द्विपप	पपर्न्यिपप	पपर्प्हिपप	पपर्भ्निपप	पपर्व्यिपप	पपर्ल्थ्यिपप	पपर्स्मिपप
पपर्द्ऱ्यिपप	पपर्न्रिपप	पपर्णिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्व्रिपप	पपर्ल्ड्रिपप	पपर्स्बिपप
पपर्ध्किपप	पपर्न्लिपप	पपर्प्तिपप	पपर्भ्रिपप	पपर्लिपप	पपर्श्किपप	पपर्स्मिपप
पपर्ध्यिपप	पपर्न्विपप	पपर्ष्थिपप	पपर्म्लिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्श्खिपप	पपर्स्यिपप
पपर्ध्निपप	पपर्म्सिपप	पपर्प्दिपप	पपर्भ्विपप	पपर्व्हिपप	पपर्श्चिपप	पपर्स्रिपप
पपर्ध्यिपप	पपर्न्हिपप	पपर्ष्यिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्किपप	पपश्छिपप	पपर्स्लिपप
पपर्ध्रिपप	पपन्भिर्यपप	पपर्प्निपप	पपर्म्तिपप	पपर्ल्खिपप	पपर्श्टिपप	पपर्स्विपप
पपर्ध्लिपप	पपन्भिर्वेपप	पपर्प्पिपप	पपर्म्दिपप	पपर्लिपप	पपर्श्तिपप	पपर्स्सिपप
पपर्ध्विपप	पपन्म्यिपप	पपर्प्भिपप	पपर्म्निपप	पपर्ल्चिपप	पपर्श्रिपप	पपस्म्यिपप
पपर्ध्सिपप	पपन्स्टिपप	पपर्मिपप	पपर्म्पिपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्बिपप	पपर्स्क्रिपप
पपर्न्किपप	पपन्स्यिपप	पपर्प्यिपप	पपर्म्बिपप	पपर्ल्टिपप	पपर्श्मिपप	पपस्त्र्यपप
पपर्न्खिपप	पपर्न्ह्यिपप	पपर्प्रिपप	पपर्म्भिपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्यिपप	पपस्थ्यिपप
पपर्न्चिपप	पपन्ज्यिपप	पपर्प्लिपप	पपर्म्मिपप	पपर्ल्डिपप	पपर्श्रिपप	पपस्म्यिपप
पपर्म्छिपप	पपन्क्सिपप	पपर्ष्विपप	पपर्म्यिपप	पपर्ल्डिपप	पपर्श्लिपप	पपस्त्विपप
पपर्न्जिपप	पपन्त्र्यपप	पपर्ष्मिपप	पपर्म्रिपप	पपर्ल्तिपप	पपर्श्विपप	पपर्स्प्रिपप
पपर्म्झिपप	पपन्त्सिपप	पपर्प्सिपप	पपर्म्लिपप	पपर्ल्थिपप	पपर्शिपप	पपस्न्यिपप
पपर्न्टिपप	पपन्थ्यिपप	पपर्प्ळिपप	पपर्म्विपप	पपर्ल्दिपप	पपर्श्चिपप	पपर्ह्लिपप
पपर्न्ठिपप	पपन्थ्विपप	पपर्प्त्यिपप	पपर्म्शिपप	पपर्ल्यिपप	पपर्स्किपप	पपर्ह्तिपप
पपर्न्डिपप	पपर्न्द्रिपप	पपर्फ्किपप	पपर्म्सिपप	पपर्ल्फिपप	पपर्स्खिपप	पपर्ह्यिपप
पपर्न्हिपप	पपर्न्ह्रिपप	पपर्फ्जिपप	पपर्म्हिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्स्छिपप	पपर्ह्मिपप
पपर्न्तिपप	पपर्म्थिपप	पपर्फ्टिपप	पपम्म्यिपप	पपर्ल्भिपप	पपर्स्जिपप	पपर्हम्यिपप

पपर्ह्मिपप

पपर्हिपप पपर्ह्निपप

पपर्ह्मिपप पपर्ह्विपप पपर्ळ्यिपप पपर्ळ्पिपप पपर्ळ्विपप पपर्स्ट्यिपप पपर्स्विपप पपर्स्विपप पपर्स्विपप

Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्डपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्ढपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्धपपक्नप पक्नपपक्पपपक्फपपक्बपपक्भपपक्मपपक्यप पक्रपपक्रपपक्लपपक्ळपपक्खपपक्वप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्दपपक्फपपक्यपप

पपक्कपपख्वपपखापपख्वपपख्वप पख्छपपख्जपपख्झपपख्जपपख्टपपख्डप पख्डपपख्णपपख्नपपख्थपपख्दपपख्धपपख्नप पख्नपपख्मपपख्कपपख्बपपख्मपपख्मप पख्नपपख्मपपख्कपपख्कपपख्मपपख्मप पख्मपपख्मपपख्कपपख्कपपख्मपपख्मप पख्मपपख्मपपख्कपपख्मप

पपग्कपपग्खपपगगपपग्घपपग्डपपग्चप पग्छपपग्जपपग्झपपग्जपपग्टपपग्ठपपग्डप पग्डपपग्णपपग्तपपग्थपपग्दपपग्धपपग्नप पग्नपपग्पपपग्कपपग्छपपग्भपपग्मपपग्यपपग्रप पग्सपपग्लपपग्कपपग्छपपग्वपपग्शपपग्रप पग्सपपग्हपपग्कपपग्छपपग्यपग्जपपग्डप पग्हपपग्कपपग्यपप

पपच्कपपच्खपपञापपघ्घपपच्छपपच्छप पच्छपपच्जपपच्झपपघ्ञपपघ्टपपघ्ठपपघ्डप पच्टपपञ्जपपघ्मपपघ्यपपघ्मपपघ्यप पञ्जपपञ्चपपघ्मपपच्छपपघ्ळपपघ्यप पञ्चपपञ्चपपघ्सपपच्छपपघ्ळपपघ्यप पच्झपपघ्मपपञ्चपपघ्सपपघ्लपपञ्चपप पच्जपपघ्डपपघ्सपपघ्सपप पपःकपपःखपपःगपपःखपपःखपपःयपः पःखपपःजपपःखपपःथपपःदपपःखपपःनपः पःदपपःगपपःयपपःथपपःदपपःथपपःनपः पःनपपःयपपःयपपःखपपःथपपःयपः पःनपपःयपपःयपपःखपपःखपपःयपः पःनपपःयपपःखपपःखपपःखपपःथपः पःयपपःखपपःखपपःखपपःखपपः।पपःजपः पःखपपःखपपःखपपःखपपःयपः।पपःजपः पःखपपःखपपःखपपःखपपः

पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटपपछठप पछडपपछढपपछगपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछनपपछपपपछफपपछबप पछभपपछनपपछ्यपपछ्पपछरपपछलप पछळपपछळपपछवपपछशपपछसप पछहपपछकपपछखपपछगपपछजपपछड़प पछढपपछकपपछखपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपञ्चपपज्झपपज्चप पज्छपपज्जपपज्झपपज्ञपपज्डप पज्दपपज्णपपज्तपपज्थपपज्दपपज्धपपज्नप पज्नपपज्पपपज्फपपज्बपपञ्भपपज्मपपज्यप पज्रपपज्रपपज्लपपज्ळपपज्ळपपज्वपपज्शप पज्षपपज्सपपज्हपपज्कपपज्खपपज्ञापपज्जप पज्डपपज्दपपज्फपपज्यपप

पपइक्तपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइग्गपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप पइऩपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप पद्मपपइसपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप पद्मपपइसपपइहपपइक्रपपइखपपइग्गपपइजप पइडपपइद्धपपइफ़पपइसपप पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्घपपञ्छपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्णपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्णपपञ्कपपञ्चपपञ्मपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्कपपञ्कपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्कपपञ्चप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टप पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्धपपट्नप पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्मपपट्यप पट्नपपट्पपट्लपपट्ळपपट्कपपट्नपपट्शप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्ढपपट्फपपट्यपप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्ङपपठ्चप पठ्छपपठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठपपठ्डप पठ्ढपपठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्धपपठ्नप पठ्नपपठ्पपपठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपपठ्यप पठ्मपपठ्सपपठ्लपपठ्ळपपठ्अपपठ्वपपठ्शप पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्जप पठ्डपपठ्इपपठ्कपपठ्यपप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्डपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डुप पड्ढपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पद्रपपड्रपपड्लपपड्ळपपड्अपपड्वपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप पड्डपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्डपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठप पढ्डपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पद्रपपढ्रपपढ्लपपढ्ळपपढ्अपपढ्नपपढ्शप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्डपपढ्सपपढ्हपपढ्कपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्डपपण्चप पण्छपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठपपण्डप पण्डपपण्णपपण्तपपण्थपपण्दपपण्धपपण्नप पण्नपपण्पपण्लपपण्ळपपण्ळपपण्यप पण्रपपण्सपपण्हपपण्कपपण्खपपण्गपप्जप पण्डपपण्ढपपण्फपपण्कपपण्खपपण्गपप्जप पण्डपपण्ढपपण्फपपण्यपप

पपत्कपपत्खपपतापपत्थपपत्ङपपत्चपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्खपपत्णप पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्पपपत्फप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्रपपत्लपपत्ळप पत्ळपपत्वपपत्शपपत्सपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पतापपत्जपपत्डपपत्कपपत्सपप

पपद्कपपद्खपपद्भपपद्घपपद्चप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्डपपद्णपपद्तपपद्थपपद्दप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्कपपद्भपद्मप पद्मपपद्नपपद्भपपद्कपपद्ळपपद्दप पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्डपपद्हपपद्कपपद्यप पद्गपपद्जपपद्डपपद्हपपद्कपपद्यप

पपध्कपपध्खपपभापपध्चपपध्चपपध्चप पध्छपपध्जपपध्झपपध्जपपध्टपपध्ठपपध्डप पध्नपपध्मपपध्मपपध्यपपध्मपपध्मपपध्यप पप्रपपश्चपपध्लपपध्ळपपध्ळपपध्वपपश्चाप पष्मपपध्सपपध्हपपध्कपपध्खपपभापपद्जप पध्चपपध्नपपध्मपपध्यप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्घपपन्छपपन्यपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्दप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्नपपन्मप पन्कपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्नपपन्सपपन्त्रप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्सपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्कपपन्सपपन्सपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्यपपत्छपपत्वपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्दप पत्गपपत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्य पपत्कपपत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्नपपत्तपपत्लप पत्ळपपत्ळपपत्वपपत्शपपत्सपपत्सपपत्हपपत्कप पत्खपपत्गपपत्जपपत्डपपत्कपपत्सपपत्यपप पपप्कपपप्खपपपापपध्यपपद्धपपप्वपपप्छप पप्जपपद्धपपप्ञपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्ढपपणाप पप्तपपध्यपपप्यपपप्रपपप्नपपप्यपपप्कप पप्कपपप्वपपध्यपपप्रपपप्रपपप्लपपप्कप पप्कपपप्वपपध्यपप्रपप्सपपप्हपपप्कपपप्खप पपापप्जपपद्धपप्द्वपप्कपप्यपप

पपभ्कपपभ्खपपभापपभ्झपपभ्झपपभ्झपपभ्छप पभ्जपपभ्झपपभ्जपपभ्खपपभ्यपपभ्जपपभ्झप पभ्यपपभ्लपपभ्जपपभ्खपपभ्यपपभ्यप पभ्यपपभ्लपपभ्जपपभ्खपपभ्यपपभ्यप पभ्यपपभ्लपपभ्कपपभ्खपपभ्यपपभ्यप पभ्यपपभ्लपपभ्लपपभ्खपपभ्यपपभ्यपभ्यप पभ्यपपभ्लपपभ्लपपभ्खपपभ्यपपभ्यपपभ्रप पभ्यपपभ्लपपभ्लपपभ्लपपभ्लपपभ्लप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्ङपपम्चपपम्छप पम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्ठपपम्डपपम्दप पम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्धपपम्नपपम्नपपम्लप पम्कपपम्ळपपम्वपपम्शपपम्षपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपम्गपपम्जपपम्इपपम्कप पम्यपप

पपय्कपपय्खपपयापपय्घपपय्डपपय्चपपय्छप पय्जपपय्झपपय्ञपपय्दपपय्घपपय्जपपय्जप पय्जपपय्बपपय्भपपय्मपप्यपप्रपप्यप्यप्य पय्कपपय्जपप्यापप्यपप्यपप्रपप्यप्य पय्कपपय्खपपयापप्यपप्यपप्यपप्यप्य पय्कपपय्खपपयापप्यपप्यपप्यप्यप्य प्यपप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्छपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्वपपर्णपपर्तपपर्थप पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्कपपर्बपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपपर्लपपर्लपपर्ळपपर्ळपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपपर्कपपर्खपपर्गपपर्जपपर्डपपर्ढप पर्फपपर्यपप

पपन्कपपन्खपपनापपञ्चपपन्डपपञ्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्जपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्कप पन्तपपश्चपपन्सपपन्यपपगूपपन्तपपन्कप पन्कपपन्वपपश्चपपन्तपपन्तपपन्कप पन्जपपन्जपपन्डपपन्कपपन्कपपन्कप पनापपन्जपपन्डपपन्कपपन्नपपन्नपप पपल्कपपल्खपपल्गपपल्घपपल्डपपल्चपपल्छप पल्जपपल्झपपल्ञपपल्टपपल्ठपपल्डपपल्ढप पल्णपपल्तपपल्थपपल्दपपल्धपपल्नप पल्पपपल्फपपल्बपपल्भपपल्मपपल्यपपल्लप पल्सपपल्लपपल्ळपपल्ळपपल्वपपल्शपपल्थप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपल्गपपल्जपपल्डप पल्सपपल्हपपल्कपपाल्खपपाल्गपपल्जपपल्डप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपपळफपपळअप पळभपपळनपपळयपपळ्रपपळलपपळअप पळळपपळवपपळशपपळषपपळसपपळहप पळकपपळखपपळग्रापपळजपपळङ्प पळकपपळखपपळग्रापपळजपपळङ्प पळढपपळफ़पपळखपप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळऩपपळपपपळफपपळबप पळभपपळनपपळयपपळपपळपपळलप पळळपपळळपपळवपपळशपपळषपपळसप पळहपपळकपपळखपपळगपपळजपपळडप पळढपपळकपपळखपप

पपळ्कपपळ्वपपञापपळ्चपपळ्पपळ्पपळ्पप पञ्जपपळ्झपपञ्जपपळ्पपळ्पपळ्पपळ्पपळ्पप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्जप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्जपपञ्जपपञ्चपपञ्चपप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्चपप पपश्कपपश्खपपश्गपपश्चपपश्डपपश्चपपश्चप पश्जपपश्झपपश्जपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्चप पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्चपपश्चप पश्पपपश्कपपश्बपपश्भपपश्मपपश्यपपश्चप पश्रपपश्लपपश्ळपपश्ळपपश्चपपश्चपपश्चप पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्चपपश्कपपश्यपप

पपष्कपपष्खपपषापपष्यपपष्डपपष्डपपष्ठप पष्जपपष्ड्रपपष्ठपपष्ठपपष्डपपष्डपपष्कप पष्जपपष्मपपष्मपपष्यपपष्रपपष्नपपष्नपपष्कप पष्छपपष्वपपश्चपपष्यपपष्रपपष्नपपष्कप पष्छपपष्वपपष्जपपष्डपपष्कपपष्कप पष्खपपष्मपप्जपपष्डपपष्कपपष्कप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्ङपपस्चप पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप पस्डपपस्णपपस्तपपस्थपपस्दपपस्थपपस्नप पस्नपपस्पपपस्कपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप पस्मपपस्तपपस्लपपस्ळपपस्छपपस्वपपस्शप पस्मपपस्सपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गपपस्जप पस्डपपस्डपपस्कपपस्यपप

पपह्कपपह्खपपद्मापपह्घपपह्डपपह्चपपह्छप पहजपपह्झपपहञपपहटपपहठपपहडपपहढप पह्मपपह्सपपट्थपपहदपपट्धपपह्मपपट्मप पट्मपपह्बपपट्भपपद्मपपह्मपपह्मपपह्मप पट्कपपह्खपपह्मपपट्शपपट्मपपट्सपपट्हप पट्कपपट्खपपट्मपपट्मपपट्डपप पट्कपपट्खपपट्मपपट्जपपट्डपप

less common half-forms

पपक्ष्कपपक्ष्खपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्षमप

पपइकपपइखपपइगपपइचपपइडपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनपपइपप पइफपपइबपपइभपपइमपप पपइयपपइलपपइळप पइपपवपपइशपप पपइषपपइसपपइसपप

पपरक्रपपरख्रपपरग्रापपरग्रपपरक्रपपरख्रपपरख्रप परज्ञपपरझ्रपपरञ्जपपरटपपरठपपरङ्गपपरद्रप परग्गपपरत्नपपर्थ्यपपरद्मपपरग्रप परक्रपपरख्रपपरभ्रपपरमपप पपर्य्यपपर्लप परळपपरग्रपवपपरश्रापप पपरश्रपपरस्मपपरह्मपप

पपश्कपपश्चपपश्चापपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्जपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्णपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्कपपश्चपपश्चपपश्चपप पपश्चपपश्चप पश्चपपश्चपपश्चपपश्चपप पपश्चपपश्चपप पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रचप पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रटप पक्रडपपक्रखपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रपपपक्रभपपक्रभप पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रपपवपपक्रशप पपक्रथपपक्रसपपक्रहपप

पपञ्कपपञ्खपपञ्जापपञ्चपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्टपपपञ्चप पञ्डपपञ्जपपञ्जापपञ्जपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जप पञ्चपपञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपप पञ्जपपञ्जपपञ्जपप

पपःक्रपपःख्रपपःग्रापपःश्चपपःह्रपपःत्वपपःश्चप पःजपपःह्रापपःञ्जपपःद्रपपःश्चपपःह्रपपःद्वप पःग्गपपःजपपःश्चपपःद्रपपःश्चपपःग्नपपःग्रप पःग्रपपःज्वपपःश्चपपःग्नपपः पपःग्यपपःजपपःज्ञप पःग्रपवपपःशापपः पपःश्वपपःश्चपपः

पपप्रक्रपपप्रखपपप्रापपप्रघपपप्रह्मपप्रचपपप्रथप पप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रचपपप्रदप पप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रधपपप्रनपपप्रपप पप्रक्रपपप्रखपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रजप पप्रमपवपप्रशपप पपप्रथपपप्रसपप

पपच्कपपच्खपपच्चापपच्चपपच्छपपच्छपपच्छप पच्चापपच्झपपच्चपपच्टपपच्छपपच्छपपच्छप पच्चापपच्चपपच्थपपच्चपपच्चपपच्मप पच्मपपच्बपपच्भपपच्मपपच्यपपच्लपपच्छप पच्मपवपपच्झपपच्मपपच्सपपच्लपप पपज्रमपपज्रवपपज्रापपज्रयपपज्रथप पज्रापपज्रापपज्रापपज्रपपज्रपपज्रपपज्रप पज्रापपज्रापपज्रापपज्रपपज्रपपज्रप पज्रमपपज्रवपपज्रभपपज्रमपपज्रप पज्रमपपज्रपपज्रपपज्रपपज्रपप

पपइक्रपपइख्रपपइग्रापपइघ्रपपइड्यप पइछ्रपपइज्जपपइझ्रपपइञ्जपपइटपपइठपपइड्य पइढ्यपइग्गपपइतपपइथ्रपपइद्यपपइध्यपपइनप पइग्रपपइक्रपपइअपपइभ्रपपद्मप पइल्रपपइळ्यपइग्रपवपपइश्रापपइश्रपपइसप पइह्रपप

पपञ्कपपञ्चपपञ्चापपञ्चपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्चापपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्चापपञ्जपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्मपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्मपवपपञ्चापप पपञ्चपपञ्चप पञ्जपप

पपण्कपपण्खपपणापपण्घपपण्डपपण्चपपण्छप पण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्डपपण्डप पण्णपपण्जपपण्थपपण्दपपण्धपपण्जपपण्पप पण्जपपण्जपपण्भपपण्मपप पपण्यपप्रजप पण्जपपण्पपवपपण्शपप पपण्रपपण्जप

पपश्कपपश्खपपश्रापपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्जपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्णपपश्चपपश्यपपश्चपपश्चपपश्मप पश्मपपश्चपपश्भपपश्मपप पपश्यपपश्चप पश्चपपश्मपवपपश्शपप पपश्मपपश्मपपश्चपप

पप्रक्रपप्रख्रपप्रगपप्रघपप्रह्रपप्रच्रपप्रछप प्रज्ञपप्रद्भपप्रञ्जपप्रट्रपप्रठपप्रह्रपप्रद्रप प्रग्णपप्रतपप्रथपप्रद्रपप्रधपप्रनपप्रभप प्रक्रपप्रख्रपप्रभपप्रमपप पप्रयपप्रलप प्रद्रजपप्रभपवपप्रशपप पप्रथ्रपप्रसपप्रह्रपप

पपन्कपपन्खपपनापपत्रपपन्छपपन्छप पन्जपपन्झपपन्जपपन्दपपन्ठपपन्छपपन्छप पन्गपपन्नपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्भप पन्त्रपपन्भपपन्मपप पपन्यपपन्नपपन्जपपन्मप वपपन्भपप पपन्भपपन्सपपन्नपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रधपपप्रङपपप्रचप पप्रछपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप पप्रडपपप्रखपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रधप पप्रनपपप्रपपपप्रकपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रळपपप्रपपवपपप्रशपप पपप्रथपपप्रसपपप्रहपप

पपळ्कपपळ्खपपञ्चापपळ्चपपळ्डपपळ्चपपळ्ठप पञ्जपपळ्झपपञ्चपपञ्चपपळ्चपपळ्चप प्रजापपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपप पपञ्चपपञ्चपपञ्चपप पपञ्चपप्रभाषा पपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपप्रमाव पपञ्चापप पपञ्चपपञ्चपप